मुद्रा-स्फीति : अर्थ, कारण एवं निदान
(Inflation : Meaning, Causes & Remedies)

हमारी अर्थव्यवस्था से संबंधित आर्थिक समस्याओं की चर्चा चलती है और कुछ समस्याओं को अँगुली पर गिना जाता है तो उनमें सबसे पहली समस्या जो सभी व्यक्ति को छू जाती है, वह समस्या मुद्रा-स्फीति तथा मूल्य-स्तर में वृद्धि की है। सामान्य शब्दों में, "मुद्रा-स्फीति वह दशा है जिसमें अर्थव्यवस्था में वस्तुओं की कीमतें बढ़ती हैं।" आधुनिक आर्थिक व्यवस्था में मुद्रा के मूल्य में एक चक्र (Cycle) की तरह सदा परिवर्तन होते रहता है। मुद्रा-स्फीति (Inflation) अर्थात मुद्रा के मूल्य में कमी तथा मुद्रा-संकुचन (Deflation) अर्थात मुद्रा के मूल्य में वृद्धि इस Cycle के दो पक्ष हैं।

MEANING:— मुद्रा-स्फीति का शाब्दिक अर्थ मुद्रा के मूल्य में कमी होना है अर्थात मुद्रा के क्रयशक्ति में कमी आने को ही Inflation कहा जाता है। मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन के परिणामस्वरूप वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य-तल में भी परिवर्तन होते रहता है।

Scanned with CamScanner

मुद्रा के मूल्य एवं सामान्य मूल्य तल (Price Level) में ठीक विपरीत संबंध है। अर्थात् जब General Price Level में वृद्धि होती है तो मुद्रा के मूल्य में कमी हो जाती है तथा मुद्रा की प्रत्येक इकाई पहले की अपेक्षा कम वस्तुएँ तथा सेवाएँ खरीद सकती है। इसके विपरीत जब General Price Level में कमी होती है तो मुद्रा का मूल्य बढ़ जाता है यानि मुद्रा की प्रत्येक इकाई पहले की अपेक्षा अधिक वस्तुएँ तथा सेवाएँ खरीद सकता है। वस्तुतः मुद्रा स्फीति वह स्थिति है जिसमें वस्तुओं के मूल्य बढ़ते हैं तथा मुद्रा का मूल्य गिरता है। इसकी माप प्रतिशत दर में प्रति इकाई समय, वर्ष या माह में होती है।

अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त मुद्रा की उपलब्धता साधारण कीमत स्तर में वृद्धि लाती है तथा मुद्रा की क्रय शक्ति को कम करती है। इस प्रकार मुद्रा स्फीति के फलस्वरूप रुपये के मूल्य में अवमूल्यन होता है

Definition of Inflation (मुद्रा स्फीति की परिभाषा)

मुद्रा स्फीति की परिभाषा के संबंध में आज भी विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है जिसके कारण इसका ठीक-ठीक अर्थ बताना कठिन सा हो जाता है फिर भी इसे निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है:—

सुप्रसिद्ध विद्वान क्राउथर (Crowther) के अनुसार, "मुद्रा स्फीति वह स्थिति है जिसमें मुद्रा का मूल्य घटता तथा वस्तुओं का मूल्य बढ़ता है।"

प्रो० पीगू के शब्दों में, "जब मौद्रिक आय (Money Income) उपार्जन-संबंधी क्रियाओं (Income earning activities) से अधिक अनुपात में बढ़ती है तब मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है।"

पीगू के अनुसार मूल्य में वृद्धि की केवल निम्नांकित दशाएँ ही मुद्रा स्फीति को बतलाती है →

(a) जब मौद्रिक आय एवं उत्पादन दोनों में वृद्धि हो रही है पर मौद्रिक आय उत्पादन की अपेक्षा अधिक तेजी के साथ बढ़ रही है।

(b) जब मौद्रिक आय में वृद्धि हो पर उत्पादन यथास्थिर हो या घट रहा हो।

Scanned with CamScanner

(c) जब मौद्रिक आय ज्यों की त्यों हो पर उत्पादन घट रहा हो।

(d) जब मौद्रिक आय, एवं उत्पादन दोनों ही घट रहे हो पर उत्पादन अधिक तेजी से घट रहा हो।

Causes of Inflation (मुद्रा स्फीति के कारण)

मुद्रा स्फीति की दृष्टि के प्रधान कारण, समग्र मौद्रिक माँग का समग्र मौद्रिक पूर्ति से अधिक होना है। केन्स के अनुसार भी "मौद्रिक माँग एवं पूर्ति में अंतर ही मुद्रा स्फीति का मूल कारण है" मौद्रिक माँग एवं पूर्ति के अंतर को अधिस्फीति-जनक अंतर (Inflationary Gap) कहा जाता है परंपरागत दृष्टिकोण से देखा जाये तो इस Gap के तीन मुख्य कारण है - (A) वित्तीय अधिस्फीति
(B) आय अधिस्फीति
(C) मौद्रिक अधिस्फीति

(A) वित्तीय अधिस्फीति → जब सरकार आय से अधिक व्यय करती है तो इसे वित्तीय अधिस्फीति का कारक माना जाता है। इस कारण बजट में

घाटा (Deficit) होता है जिसकी पूर्ति वह अतिरिक्त मुद्रा जारी कर अथवा जनता या बैंकों से ऋण लेकर करती है। ऐसा करने से संपूर्ण समाज की मौद्रिक आय एवं रोजगार में वृद्धि होगी। पर जब उपभोग वस्तुओं में इसी अनुपात में वृद्धि नहीं होती है तो स्फीति Inflationary gap की सृष्टि होती है इस प्रकार घाटे की वित्त व्यवस्था (Deficit financing) से मुद्रा प्रसार होता है

Deficit financing leads to → Increase in Supply of Money leads to → Increase in Monetary Income leads to → Demand में वृद्धि (Increase in Demand)

(B) आय-अधिस्फीति → यह आय में वृद्धि के कारण भी हो सकती है जब उत्पादन के सभी साधनों का पारिश्रमिक बढ़ जाय पर उत्पादन पूर्ववत ही रहे तो इससे भी इस स्फीति की सृष्टि होती है। पारिश्रमिक की वृद्धि के निम्न कारण हो सकते हैं — (i) उत्पादन के अधिकाधिक साधनों को रोजगार मिलने से उनकी मौद्रिक आय में वृद्धि होगी

(ii) उपभोग की वस्तुओं का अभाव होने के कारण इनकी कीमत बढ़ जाती है जिससे मजदूर अधिक मजदूरी की माँग करते हैं तथा इनकी मजदूरी बढ़ने से उत्पादन व्यय बढ़ जाता है जिससे वस्तुओं का मूल्य भी बढ़ जाता है।

(C) मौद्रिक अधिस्फीति :— समाज में संपूर्ण मुद्रा की माँग बढ़ जाने से, मौद्रिक माँग बढ़ती है पर उत्पादन में इस अनुपात में वृद्धि नहीं हो या कमी हो तो इससे Inflation की स्थिति होती है। जब अतिरिक्त मुद्रा की पूर्ति अनुत्पादक कार्यों अथवा परिकल्पना के लिए की जाती है तभी इससे मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है।

Other Causes :—

(i) सरकार द्वारा प्रत्यक्ष कर की दर में कमी के फलस्वरूप लोगों की व्यययोग्य आय में वृद्धि।

(ii) परोक्ष कर की दर में वृद्धि जो वस्तुओं के मूल्य में प्रत्यक्ष वृद्धि लाये।

(iii) प्रशासित मूल्य नीति, रेलवे सेवा, स्टील, सीमेंट, कोयला, पेट्रोल, डीजल आदि के मूल्य में वृद्धि से लागत में वृद्धि।

(iv) उत्पादन तथा स्टॉक में कमी के कारण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर Price rise होना।

मुद्रा स्फीति काल में माँग (Demand) और आपूर्ति (Supply) दोनों ही कारकों से मूल्यों में वृद्धि होती है जिसके अंतर को पाना मुश्किल हो जाता है।
संक्षेप में मुद्रा स्फीति के उपर्युक्त कारणों को समझने के दृष्टिकोण से 2 भागों में बाँटा जा सकता है।

मांग-जनित स्फीति (Demand Pull Inflation) :— यह स्फीति उत्पादों की मांग और आपूर्ति में असंतुलन की वजह से होती है।
EX → जनसंख्या वृद्धि, काला धन, मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि, विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि, आय में वृद्धि etc.

लागत जनित स्फीति (Cost Push Inflation)
यह स्फीति उत्पादों का उत्पादन मूल्य बढ़ने की वजह से होती है।
EX → अप्रत्यक्ष करों में बढ़ोतरी, कच्चे माल या मजदूरी में बढ़ोतरी, आयातित कच्चे माल के आयात शुल्क में बढ़ोतरी, परिवहन बिजली आदि के मूल्यों में वृद्धि।

मुद्रा स्फीति को दूर करने के उपाय (Remedies Of Inflation):—
मुद्रा स्फीति बहुआयामी होती है और इस पर किसी

एक नीतिगत औजार से नियंत्रण नहीं पाया जा सकता। इसके लिए कई तरीके अपनाकर एक सम्मिलित रणनीति की आवश्यकता होती है। Inflation समाज के लिए आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक सभी दृष्टि से हानिकारक सिद्ध होती है। अतः इसका नियंत्रण जरूरी है। Inflation को रोकने के लिए निम्नलिखित तरीकों का प्रयोग किया जा सकता है —

(1) मौद्रिक नीति एवं साख नियंत्रण का प्रयोग (Monetary Policy and Use of Credit Control):— अर्थव्यवस्था में मुद्रा एवं साख की मात्रा को नियंत्रित कर मूल्य तल में वृद्धि की प्रवृत्ति को रोका जा सकता है पर मौद्रिक अस्त्रों का प्रयोग तभी सफल हो सकता है जब इनका प्रयोग अधिक तीव्रता के साथ किया जाय। लेकिन इनके प्रयोग में बहुत अधिक सावधानी से कार्य लेना अनिवार्य है। क्योंकि Inflation की स्थिति में Investment एवं consumption को कम करने के लिए ब्याज दर में बहुत अधिक वृद्धि करनी होगी इससे बाजार के अव्यवस्थित होने का भय बना रहता है।

संकोचक मौद्रिक नीति के द्वारा जैसे बैंक दर में वृद्धि, खुले बाजार की क्रियाओं के अंतर्गत प्रतिभूतियों का विक्रय, C.R.R तथा S.L.R में वृद्धि इत्यादि द्वारा मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि लाने वाले प्रभाव को निरस्त करना।

(२) वित्तीय नीति (Fiscal Policy):- Inflation से लोगों के हाथ में क्रय शक्ति बढ़ जाती है जिससे मूल्य स्तर में वृद्धि होने लगती है। अतः सरकार यदि वित्तीय तरीकों द्वारा इस अतिरिक्त क्रय-शक्ति को बाजार पहुँचने के पहले ही कर या बलात् ऋण (Forced Loan) के रूप में ले ले तो इससे मूल्य स्तर में वृद्धि नहीं हो पाएगी।
संकोचक Fiscal Policy का प्रयोग जिसके अंतर्गत करारोपण में वृद्धि जिससे व्यय योग्य आय में कमी होगी। सार्वजनिक व्यय में कमी, Surplus Budget (बचत वाले बजट), ऋण का प्रतिपादन का स्थगित होना etc.

(3) प्रत्यक्ष आर्थिक नियंत्रण (Direct Economic Control):- उत्पादन के जिन साधनों का अभाव है उनके वितरण पर नियंत्रण लगाया जाय ताकि उनका उपभोग केवल आवश्यक कार्यों में हो। मूल्य नियंत्रण एवं राशनिंग की नीति इसके मुख्य अंग हैं।

(4) मजदूरी की वृद्धि पर नियंत्रण :
हुए इसके अंतर्गत मजदूरी की दर को स्थायी बनाना जरूरी है। साथ ही मुनाफा पर नियंत्रण लगाना चाहिए।

(5) उत्पादन को प्रोत्साहित करना :
Inflation रोकने का सबसे उपयुक्त उपाय आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि को प्रोत्साहित करना है।

(6) सट्टेबाजी, जमाखोरी पर नियंत्रण जरूरी है।
वस्तुतः मुद्रास्फीति बहुआयामी है। यह एक अनुभूति (Perception) है, जिसमें सरकार को मूल्य नियंत्रण क्षमता के बारे में आमलोग समझते हैं।

Scanned with CamScanner